

Ms. 51569 L. 51579





51569 to 51599























॥ श्रीहरिः ॥ शरणागतनीतिनिवृत्तिपरं  
 ॥ परपङ्क्तमौनिकरांशुनिधि ॥ निधि  
 सेवितपादसरोजयुगं ॥ युगधर्मनिव  
 र्त्तककालकरं ॥ करजो हितस्वितप्र  
 मर्दौघकुंच ॥ कुंचकुंकुमलिप्तं यशो  
 हृदयं ॥ हृदयस्थितगोकुलवासिजनं  
 ॥ जनसंचिन्तप्रपुण्यचरैकफलं ॥ फ  
 लदानपरात्तिममर्षिचुजं ॥ चुजं



ग्रा०  
२०२

× म ×

उग्रहीतकुचाग्रमणिं ॥ मणिशोचिन्न  
हस्तधृतादिवरं ॥ वरगोपवधूचयसं  
वृत्तितं ॥ वलितप्रमदायुत्तरासकरं ॥  
करपद्मयुगाहितवेणुवरं ॥ वरचक्रि  
सिरस्थितिपद्मकरं ॥ करमर्दितयाद  
वयूयुरिपुं ॥ रिपुयूयान्नुजंगर्दप्यहरं  
॥ हरपूजितरम्पसारोजपदं ॥ पदप्रस  
युगार्चनदत्तपदं ॥ पदपद्मनखस्थि



ति न न्नि रसं ॥ रस प्ररित गो प बद्ध शर  
 णं ॥ शर एण गत धो स्रज ना न यदं ॥ न  
 यदौ ह्य शिरो हर खड्ग धरं ॥ धरणी कृत  
 पु एष च ये क फलं ॥ फल हेतु विम दि  
 त तुष्ट स्वरं ॥ स्वर मुक्ति दया द सरो ज  
 वरं ॥ वर बर्हि शि खंड क युक्त कचं  
 कच पात्रा नि वै शित पुष्प चयं ॥ धोष  
 धि पति कम ला धि पति ॥ बदे त महं म



आ०  
२०३

पुराधीशं ॥१॥ इति श्रीवह्मनाचार्य  
विरचितं आर्यसमाप्तः ॥ श्रीहरिः ॥  
नवांबुदानीकमनोहराय प्रफुल्लरा  
जीवविलोचनाय ॥ वेणुस्वर्णमौद  
तगोपीकुलाय नमोस्त गोपीजनव  
हन्नाय ॥१॥ किरिकेयुरविन्द  
नाय जैवेयमालामखिरं जिनाय ॥  
स्फुरच्चलत्काचनकुंडलाय नमोस्त

5159M







































